जो सेवा करते यूनिवर्स की
ओनेस्ट बच्चे होते है
बहुतों को आप समान बनाते
सेंटर्स नये -नये खोलते है
सेवा में देह -अभिमान न करते
हरेक को फूल बनाते
बगीचा तैयार करते है
ज्ञान रत्नों को धारण करते
होली हंस कहलाते है
व्यर्थ और समर्थ को
पानी और दूध की तरह अलग करते
निर्णय सही वो लेते है
श्रेष्ठ पोजीशन में रहते
ओपोजिशन समाप्त
कर विजयी बनते है

मेरा बाबा!!